आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:16-10-14

हम भाग्यशाली बच्चों को आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र के ड्रामा का ऐक्युरेट ज्ञान देकर, हमें खुशी के खज़ाने से भरपूर करने वाले, खुशियों के सागर, बाप ने कहा, मीठे बच्चे - उठते-बैठते बुद्धि में ज्ञान उछलता रहे तो अपार खुशी में रहेंगे.

अगर हमने यह ईश्वरीय ज्ञान को ऐक्यूरेट समझा और स्वयं में धारण किया है तो कुछ भी हो जाये पर हमारी खुशी नहीं जायेंगी - यह गारंटी हैं. यह ज्ञान हमें सबसे पहले सिखाता है - मैं आत्मा हूँ. अगर यह हमने धारण किया है तो हमें यह भी मालूम रहता है की आत्मा तो सदा दिव्य गुणों - सुख, शांति, आनंद और प्रेम से भरपूर रहती है तो उसको पाने के लिए किसी भी अन्य आत्मा पर या प्रकृति पर निर्भर नहीं रहेंगे.

दूसरा यह ज्ञान हमें स्वयं परमात्मा से मिलता है. यह बात याद रहे तो हम अपने को कितने भाग्यशाली समझेंगे और इसे भी हमारी खुशी बनी रहेंगी.

तीसरा यह ज्ञान धारण करने से मैं सतयुग में लक्ष्मी-नारायण जैसा देवी-देवता बनता हूँ, यह बात तो हमारी आत्मा में खुशी के चार चांद लगा देती हैं.

यही ज्ञान में हमने जाना की यह सृष्टि चक्र एक ड्रामा है और उसमें हम सब आत्माये अपना-अपना पार्ट बजाती हैं - यह बात हमें सब परिस्थितियों में हलका बना देती हैं और हमारी खुशी गंवाने नहीं देती.

इस तरह से यह ईश्वरीय ज्ञान का हर पॉइन्ट हमारे लिए खुशियों का खजाना हैं. इसलिए आज भी बाबा आते है तो हम सब से पूछते है - बच्चे, सदा खुश हों? क्योंकि इसे ही मालूम पड़ जाता है की आत्मा ने ज्ञान को कहा तक समझा और धारण किया हैं.

आज बाबा ने ज्ञान की एक और पोइन्ट को समझाते हुए कहा - बच्चे, तुम्हें हठ-योग से ३-४ घंटे या सारी रात बाप की याद में बैठना नहीं हैं.

इस पर विचार-सागर-मंथन करें तो यह बात समझ में आती है की बाबा हमसे किसी भी तरह से अपने शरीर (प्रकृति) को कष्ट देकर हमें बाप को याद करना नहीं सिखाते हैं. बाबा हमें बताते है की सन्यासी और भक्त लोग भगवान को पाने के लिए अपने शरीर को कितना कष्ट देते हैं. अपनी हठ से भगवान को प्राप्त करने की कितनी मेहनत करते रहते हैं. लेकिन वह अपने को सुधारने के लिए या देवी-गुण धारण करने की कोई मेहनत नहीं करते हैं. जब की तुम्हें तो भगवान सामने से आकर मिले है तो उन्हें पाने के लिए या उन्हें याद करने के लिए तुम्हें अब अपने शरीर को कष्ट देने वाली कोई मेहनत नहीं करनी हैं.

बाबा कहते है, तुम बच्चों को मेहनत करनी है ईश्वरीय ज्ञान को स्वयं में धारण करने की. हमें हठ करनी है - स्वयं में देवी-गुणों को धारण करने की या कहे अपने आप को सुधारने की.

जैसे की आज से मुझे किसी को भी अपने मन-वचन-कर्म से दुख नहीं देना हैं या कहे आज से मुझे सदा खुश रहना ही है और दूसरों को भी खुशी बाटनी हैं या कहे कुछ भी हो जाये मुझे सम्पूर्ण पवित्र जरूर बनना ही हैं. ऐसे ही कुछ भी हो जाये पर अन्दर से भी मुझे किसी से नाराज (गुस्सा का सूक्ष्म रुप) नहीं होना हैं. स्वयं में संतुष्टता, धैर्यता को धारण करना ही हैं. हरेक गुणों को धारण करते हमारे में चेक करते चले, यह भी आवश्यक हैं.

ऐसे बहुत से देवी-गुणों को अपने में धारण करने की हठ करनी ही हैं तभी हम परिवर्तन होंगे और इसे ही सारा विश्व भी परिवर्तन होगा.

ॐ शांति.